:: विषयानुक्रम ::

पृष्ठ

प्राक्कथन

ऋणनिर्देश

अध्याय पहला - [१-९]

समकालीन कहानी से तात्पर्य।

भूमिका

समकालीन का अर्थ।

समकालीन की परिभाषा।

समकालीनता से तात्पर्य।

समकालीन कहानी आंदोलन।

समकालीन कहानी आंदोलन की सीमा-रेखा।

समकालीन कहानी की विशेषताएँ।

१] परिस्थिति का यथार्थ-चित्रण।

२] आर्थिक पक्ष पर बल।

३] नयी नैतिकता बोध।

४] प्रचलित व्यवस्था का विरोध।

५] शहरी वातावरण का चित्रण।

६] बुध्दि-तत्व की प्रधानता।

अध्याय दूसरा - [१०-२२]

हिंदी कहानी साहित्य में समकालीनता।

भूमिका।

परिस्थिति का यथार्थ-चित्रण।

१] शिक्षित बेरोजगारी।

२] अकाल, सूखा और बाढ की मार।

३] ग्रामीण जीवन परिवेश।

४] संबंधों का बिखराव।

५] मूल्य-परिवर्तन और मूल्यों के टूटने का दर्द।

६] विदेश-यात्रा और उससे जुड़ी समस्याएँ।

आर्थिक पक्ष पर बल।

१] जीवन के अर्थाभावों का चित्रण।

२] अर्थ का संबंधों पर पड़ा हुआ दबाव।

३] महानगर में आर्थिक तंगी।

नयी नैतिका बोध।

१] स्त्री-पुरुष के दुहरे नैतिक मानों को चुनौती।

२] विवाह और प्रेम-संबंधी नये मूल्य।

३] दांपत्य-संबंध के प्रति विचार।

४] टूटे हुए दांपत्य-संबंध [तलाक] की स्थिति।

प्रचलित व्यवस्था का विरोध।

शहरी वातावरण का चित्रण।

१] अलगाव और परायापन।

२] ऊब और एकरसता।

३] छोटेपन का अहसास।

४] जिंदगी की अनिश्चितता की तकलीफ।

५] संबंधों का थोथापन।

६] भीड़ और शोर भरी जिंदगी।

७] यातायात की समस्या।

८] मकानों की समस्या।

९] घरेलू नौकर-नौकरानी की समस्या।

१०] राशन की लंबी कतारें।

११] गंदी बस्तियों का चित्रण।

१२] होटल, क्लब आदि का चित्रण।

१३] रात्रिकालीन जीवन।

बुद्धि-तत्व की प्रधानता।

अध्याय तीसरा - [२३-७४]

समकालीन कहानी की विशेषताओं के परिप्रेक्ष्य में
अस्थाना की कहानियों की समीक्षा ।

भूमिका ।

परिस्थिति का यथार्थ-चित्रण।

१] शिक्षित बेरोजगारी ।

२] संबंधों का बिखराव ।

३] मूल्य परिवर्तन और मूल्यों के टूटने का दर्द ।

४] विदेश यात्रा और उससे जुड़ी समस्याएँ ।

आर्थिक पक्ष पर बल ।

१] जीवन के अर्थाभावों का चित्रण ।

२] अर्थ का संबंधों पर पड़ा हुआ दबाव ।

३] महानगर में आर्थिक तंगी ।

नयी नैतिकता बोध ।

१] स्त्री-पुरुष के दुहरे नैतिक मानों को चुनौती ।

२] विवाह और प्रेम संबंधी नये मूल्य ।

३] दांपत्य-संबंध के प्रति विचार ।

४] टूटे हुए दांपत्य-संबंध [तलाक]की स्थिति ।

प्रचलित व्यवस्था का विरोध।

शहरी वातावरण का चित्रण।

१] अलगाव और परायापर ।

२] ऊब और एकरसता ।

३] छोटेपन का अहसास ।

४] जिंदगी की अनिश्चितता की तकलीफ ।

५] संबंधों का थोथापन ।

६] भीड़ और शोर भरी जिंदगी ।

७] यातायात की समस्या ।

८] मकानों की समस्या ।
९] घरेलू नौकर-नौकरानी की समस्या ।
१०] राशन की लंबी कतारें ।
११] गंदी बस्तियों का चित्रण ।
१२] होटल, क्लब आदि का चित्रण ।
१३] रात्रि कालीन जीवन ।

बुध्दि-तत्व की प्रधानता ।

अध्याय चौथा - [७५-८७]

भूमिका ।

संवाद ।
१] सांकेतिक संवाद ।
२] भावात्मक संवाद ।
३] मनोवैज्ञानिक संवाद ।
४] यथार्थ संवाद ।

देश-काल-वातावरण ।

भाषा ।

शैली ।
१] वर्णनात्मक शैली ।
२] आत्मकथात्मक शैली ।
३] संवादात्मक शैली ।
४] स्वप्न शैली ।
५] मनोविश्लेषणात्मक शैली ।

उपसंहार - [८८-१०१]

समकालीन कहानी से तात्पर्य ।
आधुनिकता बोध ।
हिंदी कहानी साहित्य में समकालीनता ।
समकालीन कहानी की विशेषताओं के परिपेक्ष्य

-में अस्थाना की कहानियों की समीक्षा का निष्कर्ष।
धीरेंद्र अस्थाना की कहानियों में समकालीनता ।
अस्थाना की कहानी-कला की विशेषताएं ।
अस्थाना की कहानी की प्रमुख उपलब्धियां ।
अस्थाना की कहानी की संभावनाये ।
भविष्य के अध्येताओं के लिए संकेत ।

संदर्भ ग्रंथ सूची -